ISSN : 2348-7143 February 2019 RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 148 : Creative Writing in English, Marathi, Hindi Literature and Translation Studies

रूपसिंह चंदेल का 'गलियारे' उपन्यास का मराठी में अनुवाद : एक विवेचन

प्रा. डॉ. अनिता नेरे
शोधालेख निर्देशिका,
म. स. गा. कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय
मालेगाव, जि. नाशिक
प्रा. अनिता रोहिदास राजवंशी
शोधालेख प्रस्तोता,
स्व. अण्णासाहेब आर. डी. देवरे कला व विज्ञान महाविद्यालय
म्हसदी, ता. साक्री, जि. धुळे

प्रस्तावना :

आधुनिक कला साहित्य, दर्शन धर्म, विज्ञान तकनीकी उदयोग एवं वाणिज्य, यातायात संचार, कृषि एवं सामाजिक संस्थाओ में हुई चकाचौध पैदा कर देनेवाली उन्नति, एवं प्रगति का श्रेय मानवीय प्रतिभा एवं सर्जनशीलता को जाता है। वे व्यक्ति जो कि मानवीय प्रयत्नों के क्षेत्र में सर्जन शीलता से संपन्न है उन्हें उच्च आदर की दृष्टिसे देखा जाता है । तथा वे उच्च पद एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करते है। शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण कार्य सर्जनात्मकता की योग्यता और प्रतिभा का विकास करना है।

तीव्र परिवर्तन के इस युग में देश की प्रगती के लिये सर्जनात्मकता को महत्व है। स्वीकार करते है। हम यह पाते है कि मानव जीवन में परिवर्तन तथा नवीनता का आगमन स्वाभाविक गुण है। जो समस्त व्यक्तियों में पाया जाता है। परंतु यह, किसी में कम तो किसी में अधिक पाया जाता है प्राय : यह धारणा है कि केवल लेखक, कवि, चित्रकार, वैज्ञानिक, फिल्म, अभिनेता आदि ही सर्जनशील व्यक्ति होते है। परंतु आज के समय में यह विचार मान्य नहीं है। क्योंकि भूमंडलीरण के कारण व्यावसायिक व सामाजिक रुप में कैरियर के नित नये मार्ग खुल रहे है। जिसमें सर्जनात्मकता अपना सुखद एवं विशेष प्रभाव दिखा सकती है। यहाँपर हमे सर्जनात्मक साहित्य में अनुवाद इस विषय का अध्ययन या विवेचन विश्लेषण करना है। अनुवाद की सर्जनात्मकता और रचना शीलता की महत्वपुर्ण कसौटी साहित्यिक अनुवाद है। अनुवाद के विविध प्रकारों में यह सबसे महत और विशिष्ट प्रकार है। साहित्य के अनुवाद में भाषिक अर्थ के साथ- साथ उसके भाव तथा उसमें अन्तर्निहित विचार को भी महत्व होता है। यही कारण है, कि साहित्यिक अनुवादकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे मूल पाठ की आत्मा से एकमेव होकर अनुवाद में उस अनुभूति के साथ उसकी संवेदना का अपने अनुवाद में लाने का यत्न करें। जो मूल कृति में लेखक का अभीष्ट है। इस कार्य की सिध्दी उसी अनुवादक के अनुवाद में हो सकती है जो स्वयं उस विधा-विशेष की कृति और भाषा के सांस्कृतिक प्रभावों से परिचित हो। साहित्य के अनुवाद की मुलभूत प्रक्रियाओं से गुजरते हुए हम इस ईकाई में इसके विभिन्न स्तरों को देखने के साथ- साथ साहित्य की विभिन्न विधाओं के अनुवाद उनकी समस्याओं सहित यह भी देखने का प्रयत्न करेंगे कि साहित्यिक अनुवाद कैसे एक सांस्कृतिक रुपांतरण भी हो सकता है।

साहित्यिक अनुवाद अपने मूल प्रस्थान में एक सर्जनात्मक और सांस्कृतिक कर्म है। इस कार्य के तरह चुँकि भाषिक विनिमय के माध्यम से हम एक भिन्न संस्कृति को लक्ष्य भाषा की संस्कृति में विन्यस्त करते है। इसलिए यह कार्य सांस्कृतिक होने के साथ- साथ सामजिक और नैतिक भी होता है। साहित्य के अनुवाद के स्वरूप को समझने के क्रम में जब हम आगे बढते है। तो पाते हैं कि इसकी बहुस्तरीयता का पहला चरण पाठ को पढना है। इसमें हमें उसके भाषिक अर्थ को देखने समझने के साथ उसमें निहित विचारों और भावों को भी समझना होता है। मुल पाठ अगर काव्य है या नाटक है, तो उसके अनुरुप छंदो का प्रयोग भी आवश्यक है। जिससे भाषिक स्तर पर पाठक उसका रसग्रहण कर सकें। अनुवाद के प्रकिया मे एक बात ध्यान में रखना है की, मुलपाठ का भांषातर महज भाषांतर ही नही होता, वह एक सर्जनात्मक कर्म भी होता है। यही कारण है कि साहित्यिक अनुवाद को सर्जनात्मक या रचनात्मक कार्य भी कहा जाता है। अनुवाद अपने मुलरुप में उतना संश्लिष्ट न भी हो तो फर्क नहीं पडता, पर साहित्यिक अनुवाद के लिए यह आवश्यक है कि वह रचनात्मक हो अपनी रचनात्मकता (सर्जनात्मकता) के कारण ही वह मूल के समान महत्त्व का अधिकारी होता है। अनुवाद को सर्जनात्मक बनाने के लिए मुल कृति के पाठ से अनुवादक को एकाधिक बार गुजरना पडता है और उस कृति को अपनी सांस्कृतिकता सहित परिवेश को बार-बार जीना पडता है। अनुवादक की सर्जनात्मकता के लिए आवश्यक है। कि भुल कृति को उसको समग्र सांस्कृतिक आयामों में समझा जाय और उसे अपने देशकाल के अनुरुप बरता जाए। यह अनुवाद की सर्जनात्मकता के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

विषय प्रवेश :

कथा साहित्य का कथा साहित्य में अनुवाद करना काव्यानूवाद तथा नाटकानुवाद की तुलना में सरल होता है। सर्जनात्मक साहित्य में सर्वाधिक सांस्कृतिक तत्व कथा साहित्य में ही होते है। कथा साहित्य के अनुवादक के लिए स्त्रोत भाषा की संस्कृति की अच्छी जानकारी

Scanned with CamScanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal ISSN : 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.261 | Special Issue 148 : Creative Writing in English, Marathi, Hindi Literature and Translation Studies February 2019

...शित होती है। कथा साहित्य में मुख्यत: शब्द लोकोक्तियाँ तथा ...रे आते है। वर्तमान युग में कहानी उपन्यास आदि के प्रति पाठकों विशेष रुचि दिखाई देती है। इसलिए कथा साहित्य के अनुवाद ...से अधिक उपलब्ध होते है।

कथा साहित्य का अनुवाद करते समय भी मूल कथा का ...ह, उसकी रोचकता एवं प्रभावोत्पादकता की रक्षा लक्ष्य भाषा में ...हित होना आवश्यक है। कथावस्तु कौतुहल प्रधान होती है। उसमें ...उतार-चढाव तथा मोड होते। जिससे कथात्मक साहित्य में रोचकता ...पन्न होती है। कथा साहित्य की शैली भी महत्त्वपुर्ण होती है। अनुदित साहित्य की शैली भी इसी प्रकार की होनी चाहिए कि पाठक ...अनुभव न करे कि वह अनुवाद पढ रहा है। अनुवादक को शैली ...के शिल्प की सुक्ष्मता ओं अर्थ छायाओं कथाकार का व्यंग्य, ...लंकात्मक एवं काव्यात्मक प्रयोग आदि पर बहुत अधिक ध्यान देना ...ता है। कथा और उपन्यास के अनुवाद में मूल का प्रवाह उतना ...सहज- सुपाठय रख पाना कठिन कार्य है। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद को कला के रुप में लेना चाहिए।

अनुदित साहित्य के कारण पाठक का विश्व समृदध तथा ...व्यापक होता है। डॉ. सुशीला दुबे अनुवाद क्षेत्र का एक महत्त्वपुर्ण ...व्यक्तित्व बनकर हमारे सामने आया है। उन्होंने हिंदी साहित्य जगत के जाने -माने समकालीन कथा साहित्यकार रुपसिह चंदेल जी के ...चार उपन्यास, गलियारे, पाथरटीला, नटसार खुदीराम बोस इन चार उपन्यासो का हिंदी से मराठी में अनुवाद किया है। वह साहित्यिक व्यक्तित्व की धनी होने के कारण उनकी अनुकृति का सफलता ...निर्विवाद है।

इन अनुदित उपन्यासों ने मराठी साहित्य में हूए अनुवादों की श्रृंखला में अपना श्रेष्ठत्व सिदध किया है। मैनें अनुदित अध्ययन ...शोधालेख के लिए 'गलियारे' उपन्यास को लिया है। डॉ. सुशिला दुबे ने बडे ही सशक्त रुप में इस उपन्यास का अनुवाद किया है। मूल ...भाषा से मराठी भाषा में अनुवाद करते समय बडे ही बारिकियों से ...बारीकियों को लिखा गया है। भाषाई सौंदर्य कायम रखते हुए अनुवाद किया गया है। अनुदित कृति का मराठी साहित्य जगत में अपना अनन्य साधारण स्थान बनाना अनुवादक के अनुवाद की सफलता है। गलियारे, उपन्यास रुपसिंह चंदेल द्वारा लिखित औपन्यासिक कृति है। ...जो २०१५ में प्रकाशित हुयी है।

कथानक की दृष्टि से इस में ब्युरोक्रेसी के विद्रुप चेहरा बेनकाब करता है। ब्युरोक्रेटस द्वारा छोटे तबके के कर्मचारियो तथा बाबू या अनुभाग अधिकारी आदि को अंग्रेजों की भांति गुलाम समझने की उनकी मानसिकता को प्रतिपादित किया गया है। इसमें कथानक अफसरशाही से जुडे पहलूओं को प्रस्तुत करती है। परंतु अप्रत्यक्ष रुप से जीवन से जुडे अहम प्रश्नों को भी उभरता है। विवेच्य उपन्यास में भारत सरकार के अधीनस्थ एक ऐसे ही विभाग प्रतिरक्षा वित्त विभाग (डर्वि) के माध्यम से लेखक ने सत्ता और शक्ति खुलकर उपभोग करनेवालों का पर्दाफाश किया भ्रष्ट ब्युरोक्रेटस की कार गुजारियों को अपने लक्ष्य के अधीन रखा है। प्रशासनिक व्यवस्था का भीतरी सच्चाइयों की पडताल करता है। उच्चतम प्रशासनिक व्यवस्था देश में किस तरह काम काम करती है और किस तरह उसका चयन किया जाता है। इसकी सुक्ष्म विवेचन किया है। प्रशासनिक वर्ग में अपने को विशिष्ट मानने का भाव होता है। कथा वस्तू सुधांशु कुमार और प्रीति मजुमदार के प्रेम संबधों को लेकर है। सुधांशु एक साधारण किसान परिवार का ग्रामीण परिवेश में पला महत्वाकांक्षी और नैतिक मुल्यों का पक्षधर एक आदर्शवादी युवक है। जो दिल्ली जैसे महानगर में आकार अपनी मेहनत के बलबुते पर उच्च शिक्षा ग्रहण करता है। अपितु आई. ए. एस. की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय से संबदध एक विभाग में सहायक निदेशक के तौर पर पदासीन होता है। दिल्ली विश्वविदयालय में पढाई के दौरान सुधांशु का परिचय शिक्षा मंत्रालय के अपर सचिव नृपेन मजुमदार की बेटी प्रीति मजुमदार से होता है। सुधांशु न चाहते हुए भी प्रीति मजुमदार के प्रेमजाल में फँस जाता है। दोंनो का विवाह होता है। विवाह के पश्चात प्रीति आई.ए.एस. परीक्षा की तैयारी करती है। आई.ए.एस. के लिए उसका चुनाव होता है।

"उपन्यास में अचानक मोड प्रीति के आइ.ए.एस. बनने के बाद आता है। देहराडून में नियुक्ति मिलने के साथ ही प्रिति अपने अधिकारों के प्रति अतिरिक्त सतर्क हो ती है। वह सुधांशु से किसी भी रुप में अपने को कम मानने को तैयार नही थी। वह शादी के बाद सुधांशु के माता- पिता को लेकर सामान्य नही रह पाती उनकी आदतों में उसे गवई पिछडापन दिखाई देने लगता है।"(१)

सुधांशु जहां विभाग में व्याप्त भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी का हिस्सा बनने से इंकार करता है, वहीं प्रीती यथा स्थिती को स्वीकार कर भ्रष्टतंत्र का एक हिस्सा बनती है। इस तंत्र से अपने लिए सभी सुविधाएँ प्राप्त करने को ही अपना लक्ष्य बना लेती है। आइ.ए.एस. ट्रेंनिग के दौरान ही प्रिती मजुमदार की मुलाकात एक वरिष्ठ आइ.ए.एस. अफसर डी.पी.मीणा से होती है। इसके बाद से अपने पती सुधांशु दास से उसका कटाव होता है। वह अपने स्वार्था को पुरा करने के हिसाब से जीवन जीने लगती है। जिसके लिए सिदधांत नैतिकता, ईमानदारी आदि मूल्यों का कोई मायने नहीं रखते। उसके व्यक्तित्व में अपने पद अधिकार आदि लेकर अहं का भाव उत्पन्न होता है। जिसका वह सुधांशु को अहसास भी कराती है। "प्रिति के माध्यम से लेखक ने नई संस्कृती की खासियत चित्रित की है। यह संस्कृति नई पीढी में भोग और स्वार्थ की एक नई संस्कृति विकसित कर रही है, जिससे वह अपने उददेशों को आसानी से पुरा कर सके।"(२)

महत्व कांक्षाए व्यक्ति को कितना पतित कर सकती है इसे प्रीति मजुमदार के चरित्र की मार्फत देखा जा सकता है। वह अपने लाभ के लिए सारे समझौते करती है। सुधांशु दास प्रशासनिक वर्ग का होने के बावजुद अपने को उस संस्कृति के हिसाब से बदलनहीं पाता इसीलिए वह प्रीति से लेकर दफतर के लोंगो के निगाहों में खटकता है। कांट्रेक्टरो से मिले कमीशन का हिस्सा न लेने और उनके बिलों में पाई जाने वाली अनियमितताओं के चलते उनके करोडो के बिलों को वापस करने के अपराध में सुधांशु को अपने उच्च अधिकारियों द्वारा

बात- बातपर अपमानित होना पडता है। उसे हर तरह से मानसिक प्रताडना का शिकार होना पडता है। कभी उसका स्थानांतरण किया जाता है, तों कभी उसको उसके पद के हिसाब से काम नहीं दिया जाता है।

अफसर शाही का यदि अपना एक रुआब है तो कुछ मजबूरियाँ भी होती है। उस सबके चलते जिंदगी किस प्रकार प्रभावित होती है। और रिश्ते कैसे दरकते है, उन्हें संभालना और निभाते रखना कितना मुश्किल हो जाता है। उस का सार्थक वर्णन उपन्यास करता है।यहाँ भ्रष्टाचार को इतनी गहराई तक समाई हुई है। कि ईमानदारी कर्तव्यनिष्ठ और उसूलों पर चलनेवाले अफसरों के लिए वे किसी जंग से कम नही । उन्हें मुश्किलों, अपमान, अवहेलना और घुटन के साथ जीने के लिए कितना मजबुर किया जाता है। गलियारे के संबध मे समीक्षक रिया शर्मा अपना मतंव्य प्रस्तुत करती है,''उलझनो और राजनीतिक दाव- पेंचो का ताना -बाना रचते गलियारे भीतर ही भीतर कहाँ खुलते है और कहाँ पहुँचते है बखूबी समझाने की कोशिश में लेखक पुर्ण रुपसे सफल हुआ है। बेहद ईमान दारी के साथ कहना चाहती हु गलियारे मस्ट रीड की लिस्ट में बहुत उपर है''(३)

भाषा की सहजता का वेगमय प्रवाह और किस्सागोई की रुचिकर शैली उपन्यास की पठनीयता को बढने में सहायक है।

निष्कर्ष :

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि गलियारे इधर के कुछ वर्षो में नयी जीवन शैली के प्रतिरोध व परिवारिक बिखराव, वैयक्तिक, द्वंद्व, स्वार्थपरकता लिप्सा, भ्रष्ट होती व्यवस्था पर लिखा गया बेहतरीन उपन्यास है। दो जीवन शैलियों, दो संस्कृतियों के वापसी के आपसी द्वंद्व का विवेचन करता 'गलियारे' इस दशक का महत्वपुर्ण उपन्यास है ।

सुशिला दुबे जीने गलियारे के अनुवाद में वर्णनात्मकता, रोचकता, प्रवाहत्मकता, कौतुहलता, के सहज प्रवाह एव ता र्किकता पर विशेष ध्यानं दिया है। उपन्यास में कथा, चरित्र संदर्भ तथा उसके भीतर रचे- बसे द्वैत को पकडने में दुबे जी विशेष सफल हुई है। अपने स्थितियों के अनुकुल रखते हुए उसकी समग्रता, उसमें निहित संवेदना को दुबेजी ने अत्यंत मार्मिकता से अनुवादित किया है। सर्जनात्मक कृति में निहित भाव संवेदना, समग्र भाषिक विधानों को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्ति भिली है। सुशिला दुबे जी ने उपन्यास का आशय को सजीवता के साथ अंकित किया है। आज के सिमटते हुए संसार में अनुवाद भी अपना योगदान दे रहा है'। भारत जैसे बहुभाषी देश में अनुवाद की उपादेयता स्वयं सिदध है। भारत के विभिन्न प्रदेशों के साहित्य में निहित मूलभुत एकता के स्वरुप को निखारने के लिए अनुवाद ही एकमात्र अचुक साधन हैं। इस तरह अनुवाद द्वारा भारत की एकता को रोकनेवाली भौगोलिक और भाषायी दीवारों को ढहाकर विश्व- मैत्री को और सुदृढ बना सकते है। विश्व- संस्कृति के निर्माण में भीं अनुवाद की भूमिका सर्व विदित है।इतनाही नहीं अनुवाद दो भिन्न- भिन्न भाषाओं के बीच सांस्कृतिक सेतु का काम करता है जिससे दो भिन्न समुदायो, समाजों के मध्य भावात्मक एकता स्थापित होती है दुनिया के जिन देशों में विभिन्न जातियों एव संस्कृतियों का मिलन होता है। सामासिक संस्कृति के निर्माण में अनुवाद की भुमिका महत्त्वपुर्ण रही है।

अंतत: हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की जातीय संस्कृति को बचाए रखने में समर्थ पूर्ववर्ती कथाओं के साथ-साथ इस तथा कथित उत्तर आधुनिक दौर में लिखी जा रही श्रेष्ठ भारतीय भाषाओं के कथानुवाद के इतिहास को समुचित मुल्यांकन की प्रविधि में लाना आवश्यक है। अनुवाद का स्वरुप तथा समस्याओं को देखते हुए कहा जा सकता है। कि अनुवाद कार्य कठिन है। सर्जनात्मक तत्त्वो के प्रति जागरुकता अनुवाद की भाषा प्रकृति की अपेक्षा से यथावसर लेखक स्वतंत्रता तथा प्रभाव साम्य के प्रति सजगता के कारण साहित्यानुवाद की कठिनता को कम किया जा सकता है।

संदर्भ :

१. रुपसिंह चंदेल का साहित्यिक मुल्यांकन, संपा. नाम संक्सेना,.पृ. ५०.
२. पत्रिका आधारशिला, जुन- जुलाई २०१४, पृ. ५४.
३. रुपसिंह चंदेल का साहित्यिक मूल्यांकन, संपा. नाम सक्सेना, पृ. ५४.

Scanned with CamScanner